



Web: [parmeshwarkaniyam.org](http://parmeshwarkaniyam.org)

## ईश्वर की व्यवस्था: श्रृंखला का सारांश

### ईश्वर की व्यवस्था: प्रेम और न्याय का प्रमाण

ईश्वर की व्यवस्था उनके प्रेम और न्याय का साक्ष्य है, जो इसे मात्र दिव्य आदेशों के समूह से कहीं अधिक ऊँचा बनाती है। यह मानवता की पुनर्स्थापना के लिए एक मार्गदर्शक प्रदान करती है।

यह उन लोगों को दिशा देती है जो अपने सृष्टिकर्ता द्वारा कल्पित निष्पाप स्थिति में लौटने की खोज करते हैं। प्रत्येक आज्ञा शाब्दिक और अडिग है, जो विद्रोही आत्माओं को पुनः समेटने और उन्हें ईश्वर की पूर्ण इच्छा के साथ समरूपता में लाने के लिए बनाई गई है।

### व्यवस्था और उद्धार की शर्तें

व्यवस्था का पालन किसी पर थोपा नहीं गया है। फिर भी, यह उद्धार के लिए एक अपरिहार्य शर्त है। कोई भी व्यक्ति, जो जानबूझकर और सचेत रूप से अवज्ञा करता है, उसे न तो पुनर्स्थापित किया जा सकता है और न ही सृष्टिकर्ता के साथ मेल कराया जा सकता है।

पिता उन लोगों को नहीं भेजेंगे जो जानबूझकर उनकी व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं, ताकि वे पुत्र के प्रायश्चित्त बलिदान का लाभ उठा सकें। केवल वे, जो निष्ठापूर्वक उनके आदेशों का पालन करने का प्रयास करते हैं, यीशु के साथ मेल और उद्धार प्राप्त करेंगे।

### सत्य को साझा करने की विनम्रता और श्रद्धा

ईश्वर की व्यवस्था के सत्य को साझा करने के लिए विनम्रता और श्रद्धा आवश्यक है। यह उन लोगों को सशक्त बनाती है जो अपनी जीवन शैली को ईश्वर के निर्देशों के साथ संरेखित करने के लिए तैयार हैं।

यह श्रृंखला सदियों पुराने गलत शिक्षण से मुक्ति और सृष्टिकर्ता के साथ सामंजस्य में रहने के गहन आध्यात्मिक, भावनात्मक और शारीरिक लाभों का आनंद प्रदान करती है।

## मसीही यहूदी धर्म से आधुनिक ईसाई धर्म तक का परिवर्तन

इस अध्ययन में, यीशु और उनके प्रेरितों के मसीही यहूदी धर्म से आधुनिक ईसाई धर्म की ओर संक्रमण का अन्वेषण किया जाएगा। इस परिवर्तन ने आज्ञाकारिता को मसीह से अस्वीकार के रूप में गलत समझने की प्रवृत्ति को जन्म दिया है।

यह बदलाव न तो पुराने नियम और न ही यीशु के शब्दों का समर्थन करता है। इसने ईश्वर की आज्ञाओं की व्यापक उपेक्षा को बढ़ावा दिया है, जिनमें [सब्ब](#), [खतना](#), [खाद्य कानून](#) और अन्य शामिल हैं।

## ईश्वर की शुद्ध व्यवस्था की ओर वापसी

इन आज्ञाओं को शास्त्रों के प्रकाश में, रब्बी परंपराओं और धर्मशास्त्रीय सम्मेलनों के प्रभाव से मुक्त होकर संबोधित किया जाएगा। यह श्रृंखला सृष्टिकर्ता की शुद्ध और शाश्वत व्यवस्था की ओर वापसी की मांग करती है।

सृष्टिकर्ता की व्यवस्था का पालन कभी भी करियर प्रमोशन या नौकरी की सुरक्षा के मुद्दे तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह सृष्टिकर्ता के प्रति सच्चे विश्वास और भक्ति की आवश्यक अभिव्यक्ति है, जो ईश्वर के पुत्र मसीह के माध्यम से अनंत जीवन की ओर ले जाती है।